अनेकान्त : रूप-स्वरूप

–डॉ. राजबहादुर पाण्डेय, साहित्यरत्न
(एम. ए. (हिन्दी) : एम. ए. (संस्कृत) पी एच.डी.
सम्पादक : आनन्द बोध, दिल्ली)

कहते हैं बहुत पहले कभी एक विशाल गुफा के समीप स्थित किसी गाँव में पहली-पहली बार एक हाथी आया था। उस अद्‌भुत और अपूर्वदृष्ट जन्तु को भली-भाँति निरख-परख कर गाँव के मुखिया ने उसे गुफा के भीतर अँधेरे में बाँध दिया था।

गाँव में इस समाचार के फैलने पर कौतूहलवश गाँव के लोग हाथी को देखने आए थे। उनमें से कुछ को अलग-अलग एक-एक करके मुखिया ने हाथी का आकार जानने के लिए गुफा के भीतर भेजा था। अँधेरे में हाथ से स्पर्श करके और अपने स्पर्शानुभव के आधार पर जन्तु (हाथी) के आकार की कल्पना करके उनमें से प्रत्येक व्यक्ति गुफा से बाहर आया था और मुखिया के पूछने पर किसी ने हाथी का आकार सूप के समान, किसी ने पेड़ के तने के समान और किसी ने मोटी रस्सी के समान बताया था तथा वे अपने-अपने प्रत्यक्ष अनुभव को ही सही मानकर दूसरों को गलत बताते हुए परस्पर झगड़ने लगे थे।

तब मुखिया ने कहा था–लड़ो-झगड़ो मत। इसमें संघर्ष की बात बिल्कुल नहीं है। देखो तुममें से जिसने हाथी का आकार सूप के समान बताया है, वह भी अपने अनुभव के आधार पर सही है, मोटी रस्सी जैसा आकार है, यह बतलाने वाला भी सही है और तने जैसा आकार वाला हाथी होता है, यह बताने वाला भी सही है किन्तु प्रत्येक का अनुभव हाथी के आकार के एक पक्ष को ही प्रकट करता है। अँधेरे में स्थित हाथी के कान पर हाथ रखकर जिसने हाथी को स्पर्श किया है, उसने अपने स्पर्श-अनुभव के आधार पर सही ही कहा है कि हाथी सूप जैसा होता है। पैरों को छूकर जो आया है, उसने भी सही ही कहा है कि हाथी का आकार तने जैसा होता है तथा जो उसकी सूड़ का स्पर्श करके आया है, उसका कथन भी सही है कि वह मोटी रस्सी जैसा होता है। किन्तु ये सब कथन हाथी के शरीर के एक-एक अंग के आकार को प्रस्तुत करते हैं–उसके आकार के एक पक्ष को ही प्रस्तुत करते हैं। हाथी के आकार की समग्रता को प्रकट नहीं करते अतः सही होते हुए भी एकांगी अथवा एक पक्षीय हैं। हाथी के आकार के अनेक पक्ष हैं। तुम सबने अपने सीमित अनुभव के आधार पर ही हाथी के आकार का वाणी से प्रस्तुतीकरम किया है। सबका कथन सही है, किन्तु अपूर्ण है अतः इसमें एक-दूसरे को गलत बताकर परस्पर संघर्ष की बात बिल्कुल नहीं है। तब मुखिया का समझदारी भरा और तर्कसंगत यह कथन सुनकर सभी शान्त हो गए थे।

यह घटना न मालूम कब की है और यह घटी कहाँ थी, इसके विषय में निश्चित रूप से तो कुछ नहीं कहा जा सकता, किन्तु जब भी घटी थी, तभी से यह दर्शन के एक दिव्य-सिद्धान्त के दृष्टान्त के रूप में सर्वत्र उद्‌धृत की जाती रही है। वह दिव्य सिद्धान्त ही अनेकान्त है। हम अपने इस लेख में अनेकान्त की ही संक्षिप्त व्याख्या प्रस्तुत करने जा रहे हैं।

सिद्धान्त शब्द की व्युत्पत्ति है–सिद्धः अन्तः यस्य स सिद्धान्तः अर्थात् सिद्ध यानी प्रमाणित है, 'अन्त' यानी पक्ष जिस मान्यता का वह कहलाती है–सिद्धान्त।

विश्व में प्रचलित एवं आचरित अनेक धर्मों (सम्प्रदायों) के अपने-अपने अनेक दर्शन एवं अनेक सिद्धान्त हैं; किन्तु जैनधर्म के अपने दर्शन का अथवा जैनागम का 'अनेकान्त' सिद्धान्त मात्र सिद्धान्त ही नहीं है, वह तो सिद्धान्तरत्न है तथा इसी सिद्धान्त के आधार पर जैन-धर्म को विश्वधर्म की संज्ञा प्राप्त हुई है। कहा जाता है कि हाथी के 'पाँव में सबका पाँव' यानी हाथी के पद चिह्न इतने बड़े होते हैं कि उनमें सब जीवों के पद-चिह्न समा जाते हैं। अनेकान्त सिद्धान्त भी ऐसा व्यापक है कि उसमें सिद्धान्त मात्र के मूल तत्त्व समाविष्ट हैं। जिसके आचार से वैचारिक तथा अन्य प्रकार के सभी संघर्षों एवं अशान्ति का विसर्जन होकर विश्व में सर्वत्र सत्य, शान्ति एवं अहिंसा स्थापित हो सकती है।

'अनेकान्त' शब्द का सन्धि-विच्छेद करने पर उसमें से तीन शब्द निकलते हैं–अन्+एक+अन्त। ये तीन शब्द ही मानो त्रिविध तापों के शमन प्रतीक हैं। अन्+एक माने एक नहीं अनेक (कई) और अन्त माने पक्ष। सम्मिलित तीनों शब्दों का अभिप्राय है–'एक नहीं कई पक्ष'।

जैनदर्शन का एक सूत्र है–**वत्थु सहावो धम्मो अर्थात् वस्तुः स्वभावः धर्मः**। वस्तु, पदार्थ व्यक्ति का स्वभाव ही उसका धर्म है। स्वभाव का अर्थ है–वह भाव जो उसका अपना बन गया है, उसमें सर्वथा रचा-बसा हुआ है, वह भाव जो प्रत्येक परिस्थिति में उसमें बना ही रहता है, उससे कभी अलग नहीं होता। दर्शन कहता है कि प्रत्येक वस्तु का स्वभाव है कि उसका एक पक्ष नहीं होता वह अनेक पक्षों-अन्तों-धर्मों वाली होती है। अर्थात् प्रत्येक पदार्थ, प्रत्येक वस्त्र अथवा प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व अनेक पक्षी, अनेक धर्मी होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूसरे प्रकार से कहें तो वस्तु अनेकान्तिनी होती है। उसको देखने वाला व्यक्ति अपनी देखने की शक्ति की सीमितता के कारण उसके एक पक्ष को ही देख पाता है। किन्तु वह मान लेता है कि मैंने वस्तु को या व्यक्ति को अपनी आँखों से देखकर पूरी तरह जान लिया। इस प्रकार एक अन्य व्यक्ति भी उस वस्तु के एक अन्य पक्ष को अपनी सीमित दृष्टि से देखकर यह मान बैठता है कि मैंने अपनी आँखों के प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा उस वस्तु को पूरी तरह देखकर जान लिया है किन्तु वास्तविकता तो यह है कि दोनों ने वस्तु के एक-एक पक्ष को ही जाना है।

उस अनेकान्तिनी अनेक पक्षों और अनेक धर्मों वाली वस्तु के अन्य कई पक्ष, अन्त और धर्म उन दोनों के द्वारा अनदेखे रह गए हैं। किन्तु वे अपने-अपने सीमित अनुभवों के आधारों पर यह मानकर कि हमीं सही हैं दूसरा गलत है, परस्पर झगड़ते हैं और इसी सीमित दृष्टिकोण के कारण संसार में संघर्षों तथा हिंसा तथा असत्य का जन्म होता है। तब अनेकान्त सिद्धान्त यह कहता है, उन दोनों संघर्ष शील व्यक्तियों से कि भय्या! इसमें संघर्ष की बात बिल्कुल है नहीं, बस इतनी सी बात है कि तुम ही सही नहीं हो। वास्तविकता तो यह है कि तुम भी सही हो और तुम भी सही हो, तथा वस्तु का दृष्टा अन्य व्यक्ति भी सही है।

इसीलिए दर्शन का यह सिद्धान्त आचार में भी सिद्धान्त या स्याद्वाद' कहलाया, और इसी सिद्धान्त से इस स्वर्णिम वाक्य का जन्म हुआ कि 'जियो और जीने दो' यानी तुम भी जियो और दूसरों को भी जीने दो। कवि ने कहा भी है–

"विधि के बनाये जीव जेते हैं जहाँ के तहाँ,
खेलत-फिरत तिन्हें खेलन फिरन देउ।"

जीने का अधिकार तुम्हारा ही नहीं, सभी का है। यह नहीं कि तुम अपने जीने के लिए दूसरों की हिंसा करो। यह तो इसलिए भी अनुचित है कि तिसे तुम दूसरा समझ रहे हो, वह दूसरा है ही नहीं। तात्त्विक दृष्टि से वह भी वही है जो कि तुम हो। फिर तुम चेतन हो या दूसरा चेतन है अथवा जड़ सब में एक ही तत्त्व की प्रधानता है–

"एक तत्त्व की ही प्रधानता।
वह जड़ हो अथवा हो चेतन॥"

इस प्रकार इस सिद्धान्त से हिंसा का निरसन एवं शान्ति, अहिंसा तथा सत्य धर्म की प्रतिष्ठा होती है और अभेदवाद की पुष्टि होती है। सारांशतः यह सिद्धान्त सत्य भी है, शिव अर्थात् कल्याणकारक भी है और सुन्दर भी है यानी सत्यं शिवं सुन्दरं है।

पता :
उत्तरायन
सी-२४, आनन्द विहार
न्यू दिल्ली–११००९२

जीवन की घड़ी

अब बना सफल जीवन की घड़ी॥
सत्य साधना कर जीवन की जड़ी॥टेर॥

नर तन दुर्लभ यह पाय गया।
विषयों में क्यों तू लुभाय गया॥
जग जाल में फँसता ज्यों मकड़ी॥१॥

परिवार साथ नहीं आयेगा।
नहीं धन भी संग में जायेगा॥
क्यों करता आशाएँ बड़ी-बड़ी॥२॥

दुष्कर्म कमाता जाता है।
नहीं प्रभु के गुण को गाता है॥
पर मौत सामने देख खड़ी॥३॥

जग के जंजाल को छोड़ जरा।
महावीर प्रभु को भज ले जरा॥
"मुनि पुष्कर" धर्म की जोड़ कड़ी॥४॥

–उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि
(पुष्कर-पीयूष से)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org